International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)
Volume 2, Issue 6, June 2019

खोयी आत्म संभव का अन्वेषी : मुक्तिबोध

Dr. Rita Pandey

Associate Professor, Dept. of Hindi, V.S.S.D. College, Kanpur, Uttar Pradesh, India

सारांश

मुक्तिबोध का जन्म 13 नवम्बर, 1917 को रात २ बजे [श्योपुर] में माधवराव-पार्वती दंपत्ति के घर हुआ। शिशु का पूरा नाम रखा गया- गजानन माधव मुक्तिबोध। वे माता-पिता की तीसरी संतान थे। उनसे पहले के दोनों सिशु अधिक जीवित नहीं रह सके थे। इस कारण मुक्तिबोध के लालन-पालन और देख-भाल पर अधिक ध्यान दिया गया। उन्हें खूब स्नेह और ठाठ मिला। शाम को उन्हें बाबागाड़ी में हवा खिलाने के लिए बाहर ले जाता। सात-आठ की उम्र तक अर्दली ही उन्हें कपड़े पहनाते थे। उनकी सभी ज़रूरतो का ध्यान रखा जाता रहा | उनकी हर माँग पूरी की जाती रही। उन्हें घर में 'बाबूसाहब' कहकर पुकारा जाता था। वे परीक्षा में सफल होते तो घर में उत्सव मनाया जाता था। इस अतिरिक्त लाड़-प्यार और राजसी ठाट-बाट में पला बालक हठी और जिद्दी हो गया।

अंधेरे में' मुक्तिबोध की एक प्रमुख कविता है जिसकी मूल संवेदना एवं कथ्य को लेकर आलोचकों में एक अच्छी खासी बहस होती रही है।वैसे देखें तो इस कविता की इधर कई व्याख्याएं प्रकाश में आ चुँकी हैं।

प्रख्यात आलोचक डॉ.नामवर सिंह ने अपनी पुस्तक 'कविता के नये प्रतिमान' के दूसरे संस्करण में लिखा है कि मुक्तिबोध की कविता का मूल कथ्य 'अस्मिता की खोज' है।वह अस्मिता एक वर्ग की अस्मिता (Identity) है।वह वर्ग है-निम्न मध्य वर्ग।जिस अलगाव अथवा आत्म निर्वासन के कारण व्यक्ति के स्तर पर अस्मिता का लोप होता है,वह यदि समाज के स्तर पर हो तो वर्ग भेद जन्म लेता है।

मुक्तिबोध की के अनुसार पूँजीवादी व्यवस्था में इस अलगाव के शिकार सब वर्गों के लोग होते हैं किंतु इसका सबसे घातक प्रभाव मजदूर वर्ग पर पड़ता है - इस हद तक कि वह सर्वहारा हो जाता है।" वर्ग- व्यक्तित्व का खोना भी अस्मिता का लोप है।इस अर्थ विस्तार से अस्मिता की खोज का अर्थ होगा- एक पूरे वर्ग की अस्मिता की खोज (यहां विशेष रूप से निम्न मध्य वर्ग की)।

मुक्तिबोध की की मान्यताओं का सहारा लेते हुए,वर्ग की अस्मिता कैसे खोजी जाय इसका निर्देश भी दिया है।मजदूर वर्ग यदि अपनी अस्मिता को खोजना चाहे तो उन्हें वर्ग-चेतन होना होगा। दूसरे शब्दों में वर्ग चेतना का ह्रास ही अस्मिता का लोप है और वर्ग -चेतना को जगा लेना ही अस्मिता की खोज है।

अब अभिव्यक्ति के सारे खतरे

उठाने ही होगें ।

तोड़ने होगे ही मठ और गढ़ सब ।

परिचय

हिंदी साहित्य में गजानन माधव मुक्तिबोध (1917- 1964) ने कहानी, उपन्यास, कविता और आलोचना जैसी विधाओं में अपना अतुलनीय योगदान दिया है। मुक्तिबोध घोषित मार्क्सवादी थे और इन्होंने अपनी कविताओं में पूँजीवाद के विरुद्ध औचित्यपूर्ण संघर्ष को प्रस्तुत किया है।

'भूरी भूरी खाक धूलि', 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' और 'तारसप्तक' में इनकी कविताएँ प्रकाशित हुई थी। 'अंधेरे में' और 'ब्रह्मराक्षस' इनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध कविताएँ हैं। आइए संक्षिप्त में देखते हैं मुक्तिबोध के काव्य की प्रमुख विशेषताओं को।[1,2]

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)
Volume 2, Issue 6, June 2019

गजानन माधव मुक्तिबोध

"मुक्तिबोध जिस मानव मुक्ति का स्वप्न देखते है,वह सामान्यवर्ग शोषण से मुक्ति नहीं है।वह मनुष्य की साधारण संभावनाओं और क्षमता का विकास भी नहीं है।उन्हें चाहिए मानव आत्मा की पूर्ण सत्ता।"

पूर्णता की कामना रहस्यवादी प्रभाव के कारण है।मुक्तिबोध की यह चेष्टा उन्हें 'अंधेरे में' कविता में दिखलाई पड़ती है।वे लिखते है- "अंधेरे में कविता में जिस रहस्य मय व्यक्ति को मुक्तिबोध खोज रहे है,वह उनकी संभावनाओं, निहित प्रभावों प्रतिमाओं की 'पूर्ण अवस्था' है,मेरे परिपूर्ण का आविर्भाव है।रात का पक्षी उन्हें बताता है,वह तेरी पूर्णतम परम अभिव्यक्ति है।इसलिए कविता के अंत में यह अभिव्यक्ति प्राप्त नहीं होती।उनके अनुसार मुक्तिबोध भी परिपूर्ण,पूर्णतम आदि विशेषणों से अतिरेकवादी पूर्णता की ही कामना करते है।

'अंधेरे में' कविता को भाव-बोध के स्तर पर अनिश्चित पाते हुए डॉ. शर्मा ने 'व्यक्तित्वान्तर' को इस कविता की मूल समस्या माना है।

वह जल पीकर

मेरे युवकों में होता जाता व्यक्तित्वान्तर ।

इनके कविताओं की सबसे प्रमुख विशेषता है इनका फैंटेसी शिल्प। सरल शब्दों में कहें तो फैंटेसी उस कल्पना को कहते हैं जिसमें व्यक्ति काल्पनिक दुनिया में वास्तविक जीवन की अपूर्णताओं की पूर्ति करता है। मुक्तिबोध मार्क्सवादी कवि हैं और अपनी विचारधारा के अनुसार वे सघन यथार्थ को अपनी कविता में उतारने का प्रयत्न करते हैं। गौरतलब है कि इन्होंने इसके लिए फैंटेसी शिल्प का प्रयोग किया, जो कि यथार्थवाद के विपरीत है।

मुक्तिबोध यथार्थवाद की अभिव्यक्ति के लिए गैर-यथार्थवादी शिल्प के प्रयोग को उचित मानते हैं। फैंटसी शिल्प के प्रयोग के कारण ही मुक्तिबोध सघन, जटिल और गतिशील यथार्थ को आसानी से पकड़ने में सफल हुए हैं। इसके अलावा इनके काव्य में नाटकीयता और रहस्यात्मक वातावरण की उपस्थिति भी इसी फैंटेसी शिल्प की ही देन है। एक उदाहरण से इसे देखते हैं

"खूब ऊँचा एक जीना साँवला

उसकी अंधेरी सीढ़ियाँ.....

वे एक आभ्यंतर निराले लोक की।

एक चढ़ना औ' उतरना,

पुनः चढ़ना औ' लुढ़कना,

मोच पैरों में

व छाती पर अनेकों घाव।"

इनके काव्य की अगली महत्त्वपूर्ण विशेषता है - इनकी कविताओं में बिम्ब की उपस्थिति। इनके काव्य में बिम्बों की अत्यधिक उपस्थिति के कारण इन्हें 'बिम्बों का नगर' भी कहा जाता है। इनके बिम्ब प्रतीकात्मकता, कठोरता और रहस्यात्मकता से युक्त होते हैं। उदाहरण के लिए ब्रह्मराक्षस की इन पंक्तियों में गतिशील संश्लिष्ट बिम्ब देखे जा सकते हैं -

" ब्रह्मराक्षस,

घिस रहा है देह,

हाथ के पंजे बराबर,

बाँह - छाती- मुँह छपा छप।"[3,4]

इनके काव्य की अगली विशेषता इनकी प्रतीक योजना में निहित है। सामान्यतः मार्क्सवादी कवियों ने प्रतीकों से परहेज किया है लेकिन मुक्तिबोध की कविताएँ प्रतीकात्मकता से युक्त हैं। इनके द्वारा प्रतीकों के प्रयोग का प्रमुख कारण कविता को चमत्कार से युक्त करना नहीं है बल्कि यथार्थ को सघनता के साथ प्रस्तुत करना है। इन्होंने ब्रह्मराक्षस, मनु जैसे मिथकीय प्रतीकों के साथ ही गांधी, टॉलस्टाय जैसे ऐतिहासिक प्रतीकों को भी अपनी कविता में सम्मिलित किया है।

अगली विशेषता है इनकी कविताओं में विद्यमान लय। यदि हम इनकी कविताओं में लयात्मकता की खोज करें तो पाते हैं कि यदि कुछ गिने-चुने स्थलों को छोड़ दें तो लय इनकी कविताओं में सर्वत्र विद्यमान है। यह भी देखने योग्य बात है कि इनकी कविताओं में लय न सिर्फ बाहरी आवरण के रूप में बल्कि आंतरिक अनुशासन के तौर पर भी है। यह विशेषता इनकी कविता 'अंधेरे में' की इन पंक्तियों में देखी जा सकती है -

"उनके पीछे चल रहा

संगीन - नोकों का चमकता जंगल

चल रही पदचाप, ताल-बद्ध दीर्घ पाँत

टैंक - दल, मोर्टार, आर्टिलरी, सन्नद्ध।"

समग्रतः स्पष्ट है कि जहाँ एक ओर मुक्तिबोध के कविताओं की संवेदनागत विशेषताओं में आत्मसंघर्ष के साथ ही पूंजीवादी व्यवस्था के विरुद्ध औचित्यपूर्ण संघर्ष विद्यमान है तो वहीं दूसरी ओर शिल्पगत विशेषताओं में उनकी अद्वितीय फैंटेसी शिल्प के साथ ही बिम्ब योजना, प्रतीक योजना और लयात्मकता इनके काव्य को रमणीय बनाती है।[5,6]

विचार – विमर्श

"अंधेरे में कविता की मूल समस्या यही है- मध्य वर्ग का बुद्धिजीवी सर्वहारा वर्ग से तादात्म्य कैसे स्थापित करें। मुक्तिबोध इस प्रक्रिया को एक रूपक द्वारा प्रस्तुत करते है।एक बलवान लुहार ने बहुत से कंडे जलाकर उस पर लोहे का चक्का रखा,कुछ अन्य बलवान लोग लकड़ी के चक्के पर जबरन मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के व्यक्तितव पर संकल्प का टायर चढ़ाता है।"

आगे चलकर व्यक्तित्वान्तर अथवा व्यक्तित्व परिवर्तन की बात को वे कविता के नायक से हटाकर कवि मुक्तिबोध पर लागू कर देते है और यह मानने लगते है कि 'अंधेरे में' कविता के प्रतीकों द्वारा मुक्तिबोध ने स्वयं अपने व्यक्तित्व परिवर्तन की बात कही है।इतना निश्चित है कि डॉ.राम विलास शर्मा 'अस्मिता की खोज' को इस कविता का मूल कथ्य नहीं मानते।उन्होंने अपने विस्तृत निबंध में डॉ.नामवर सिंह की मान्यता की आलोचना की है।

परिणाम

मुक्तिबोध तारसप्तक के पहले कवि थे। मनुष्य की अस्मिता, आत्मसंघर्ष और प्रखर राजनैतिक चेतना से समृद्ध उनकी कविता पहली बार 'तार सप्तक' के माध्यम से सामने आई, लेकिन उनका कोई स्वतंत्र काव्य-संग्रह उनके जीवनकाल में प्रकाशित नहीं हो

पाया। मृत्यु के पहले श्रीकांत वर्मा ने उनकी केवल 'एक साहित्यिक की डायरी' प्रकाशित की थी, जिसका दूसरा संस्करण भारतीय ज्ञानपीठ से उनकी मृत्यु के दो महीने बाद प्रकाशित हुआ। ज्ञानपीठ ने ही 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' प्रकाशित किया था। [11] इसी वर्ष नवंबर १९६४ में नागपुर के विश्वभारती प्रकाशन ने मुक्तिबोध द्वारा १९६३ में ही तैयार कर दिये गये निबंधों के संकलन नयी कविता का आत्मसंघर्ष तथा अन्य निबंध' को प्रकाशित किया था। परवर्ती वर्षो में भारतीय ज्ञानपीठ से मुक्तिबोध के अन्य संकलन 'काठ का सपना', तथा 'विपात्र' (लघु उपन्यास) प्रकाशित हुए। पहले कविता संकलन के १५ वर्ष बाद, १९८० में उनकी कविताओं का दूसरा संकलन 'भूरी भूर खाक धूल' प्रकाशित हुआ और १९८५ में 'राजकमल' से पेपरबैक में छः खंडों में 'मुक्तिबोध रचनावली' प्रकाशित हुई, वह हिंदी के इधर के लेखकों की सबसे तेजी से बिकने वाली रचनावली मानी जाती है। कविता के साथ-साथ, कविता विषयक चिंतन और आलोचना पद्धति को विकसित और समृद्ध करने में भी मुक्तिबोध का योगदान अन्यतम है। उनके चिंतन परक ग्रंथ हैं- एक साहित्यिक की डायरी, नयी कविता का आत्मसंघर्ष और नये साहित्य का सौंदर्य शास्त्र। भारत का इतिहास और संस्कृति इतिहास लिखी गई उनकी पुस्तक है। काठ का सपना तथा सतह से उठता आदमी उनके कहानी संग्रह हैं तथा विपात्रा उपन्यास है। उन्होंने 'वसुधा', 'नया खून' आदि पत्रों में संपादन-सहयोग भी किया।[7,8]

निष्कर्ष

मुक्तिबोध हिन्दी साहित्य की स्वातंत्र्योत्तर प्रगतिशील काव्यधारा के शीर्ष व्यक्तित्व थे। हिन्दी साहित्य में सर्वाधिक चर्चा के केन्द्र में रहने वाले मुक्तिबोध कहानीकार भी थे और समीक्षक भी। [9] उन्हें प्रगतिशील कविता और नयी कविता के बीच का एक सेतु भी माना जाता है। मुक्तिबोध हिन्दी संसार की एक घटना बन गए। कुछ ऐसी घटना जिसकी ओर से आँखें मूंद लेना असम्भव था। उनका एकनिष्ठ संघर्ष, उनकी अटूट सच्चाई, उनका पूरा जीवन, सभी एक साथ हमारी भावनाओं के केंद्रीय मंच पर सामने आए और सभी ने उनके कवि होने को नई दृष्टि से देखा। कैसा जीवन था वह और ऐसे उसका अंत क्यों हुआ। और वह समुचित ख्याति से अब तक वंचित क्यों रहा? यह तल्ख टिप्पणी शमशेर बहादुर सिंह की है जो उन्होंने बड़े बेबाक ढंग से हिंदी जगत् के साहित्यकारों की निस्संगता पर कही है।[10,11]

संदर्भ

1. चाँद का मुँह टेढ़ा है – (कविता संग्रह), 1964, भारतीय ज्ञानपीठ.
2. नई कविता का आत्मसंघर्ष तथा अन्य निबंध (निबंध संग्रह), 1964, विश्वभारती प्रकाशन.
3. एक साहित्यिक की डायरी (निबंध संग्रह), 1964, भारतीय ज्ञानपीठ.
4. काठ का सपना (कहानी संग्रह), 1967, भारतीय ज्ञानपीठ.
5. विपात्र (उपन्यास), 1970, भारतीय ज्ञानपीठ.
6. नये साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, 1971, राधाकृष्ण प्रकाशन.
7. सतह से उठता आदमी (कहानी संग्रह), 1971, भारतीय ज्ञानपीठ
8. कामायनी: एक पुनर्विचार, 1973, साहित्य भारती.
9. भूरी-भूरी खाक धूल – (कविता संग्रह), 1980, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन.
10. मुक्तिबोध रचनावली, नेमिचंद्र जैन द्वारा संपादित, (6 खंड), 1980, राजकमल प्रकाशन.
11. समीक्षा की समस्याएं, 1982, राजकमल प्रकाशन.